श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2013

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 27 जनवरी 2013	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 28 जनवरी 2013	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
मंगलवार 29 जनवरी 2013	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग-1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **- ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2539) 354 अंक : 6

श्री मुनि राजत...

श्री मुनि राजत समता संग, कायोत्सर्ग समाहित अंग।।टेक।।
करतें नहिं कछु कारज तातें, आलम्बित भुत कीन अभंग।
गमन काज कछु हूँ नहिं तातैं, गति तजि छाके निजरस रंग।।
श्री मुनि राजत... ।।1।।
लोचन तैं लखिवौ कछु नाहीं, तातैं नासा-दृग अचलंग।
सुनिवे जोग रह्यो कछु नाहीं, तातैं प्राप्त इकन्त सुचंग।।
श्री मुनि राजत... ।।2।।
तहँ मध्याह्न माँहि निज ऊपर, आयो उग्र प्रताप पतंग।
कैधों ज्ञान पवन-बल प्रज्वलित, ध्यानानल सौं उछलि फुलिंग।।
श्री मुनि राजत... ।।3।।
चित निराकुल अतुल उठत जहँ, परमानन्द पीयूष तरंग।
'भागचन्द' ऐसे श्रीगुरु पद, वन्दत मिलत स्वपद उत्तंग।।
श्री मुनि राजत... ।।4।।

- कविवर पण्डित भागचन्दजी

छहढाला प्रवचन

मोक्ष तत्त्व

सकल कर्मतैं रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी।
इहि विधि जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यवहारी।।
देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
ये हु मान समकित को कारण, अष्ट-अंग-जुत धारो।।१०।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

भगवान आत्मा आनंदस्वरूप है, आनंद बाहर में नहीं है। सच्चे आनंद के वेदन में बाह्यवस्तु निमित्त भी नहीं है, वह तो विषयातीत है, आत्मा में से ही उसकी उत्पत्ति है। मोक्षरूप ऐसा महा-आनन्द जीव का ही स्वभाव है। ऐसी आनन्दरूप मोक्षदशा सम्यक्त्वादि आठ महागुणों से युक्त है और उसमें मोहादि आठ कर्मों का अभाव है। ऐसी मोक्षदशा-सिद्धदशा-परमपद सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र से ही होती है; अन्य किसी साधन से नहीं होती। यह मोक्षदशा अविनाशी, स्थिर, सुखमय है, प्रगट होने के बाद जैसी की तैसी ही रहती है। साधकभावरूप मोक्षमार्ग का काल तो मर्यादित है (असंख्य समय ही है); किन्तु उसके साध्यरूप मोक्षदशा तो अमर्यादित (सादि-अनंत) है, उसे काल की कोई मर्यादा नहीं है; अनन्तकाल में कभी भी उसे दुःख नहीं आयेगा, वह सदाकाल सुख में ही विराजमान रहेगा। अहो, ऐसे मोक्षपद को पहचानकर उसकी भावना करना योग्य है।

पहले तो ऐसे तत्त्वों की सच्ची श्रद्धा करनी चाहिए और उनमें से कौन-कौन तत्त्व आदरणीय हैं - यह पहिचानना चाहिए। जो बन्ध को आदरणीय मानेगा, वह मोक्ष का उपाय कैसे करेगा ? परभावों से भिन्न चैतन्य को अनुभव में लेकर उसकी श्रद्धा करना सम्यग्दर्शन है। आत्मा आनन्द का सागर है, वह स्वयं अपने सन्मुख होने से आनन्द के वेदन सहित वीतरागी श्रद्धा का उत्पादक होता है।

चौथे गुणस्थान का सम्यग्दर्शन रागरहित ही है; उस भूमिका में राग भले हो; परन्तु सम्यग्दर्शन स्वयं तो रागरहित ही है और वह मोक्ष का कारण है। उसके साथ का राग तो बन्ध का कारण है।

प्रथम तो अच्छी तरह से तत्त्व का दृढ़ निर्णय करना चाहिए। निश्चय-व्यवहार को एक-दूसरे में मिलाये बिना दोनों का स्वरूप जैसा है, वैसा जानना चाहिए। सच्चे देव-गुरु-शास्त्र व्यवहार सम्यग्दर्शन का विषय हैं; निश्चय-सम्यग्दर्शन के विषय में परवस्तु नहीं आती, वह तो अचिंत्यशक्ति से परिपूर्ण अपने आत्मा की ही श्रद्धा करता है। पर से भिन्न और अपने गुण-पर्यायों से अभिन्न - ऐसा मेरा शुद्ध आत्मा ही मेरे लिए आदरणीय है - ऐसा धर्मी जानते हैं। देव-गुरु आदि की श्रद्धा को व्यवहारसम्यग्दर्शन कहा; परन्तु इससे ऐसा नहीं समझना कि उनके आश्रय से आत्मा को धर्मलाभ होता है। शुद्ध आत्मा के सम्यग्दर्शन के साथ योग्य भूमिका में ऐसा ही व्यवहार होता है, विरुद्ध नहीं होता - ऐसा जानना।

व्यवहार सम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की पर्याय नहीं है; निर्विकल्प प्रतीतिरूप निश्चयसम्यग्दर्शन ही श्रद्धागुण की पर्याय है; अत: वही सच्चा सम्यग्दर्शन है। भगवान आत्मा चैतन्यपिंड आनंदरस स्वरूप है, वही सम्यग्दर्शन है; अभेदरूप से शुद्ध आत्मा ही सम्यग्दर्शन है - ऐसा समयसार में कहा है। ऐसे सम्यग्दर्शन को अपने हित के लिए आठ अंग सहित धारण करना चाहिए। निश्चय सम्यग्दर्शन के साथ व्यवहार सम्यग्दर्शन में आठ अंगों के विकल्प होते हैं। सम्यग्दृष्टि के निश्चय आठ अंगों का स्वरूप समयसार के निर्जरा अधिकार में कहा है। व्यवहार सम्यग्दर्शन अकेला (निश्चय से रहित) नहीं होता; हाँ, निश्चयसम्यग्दर्शन अकेला हो सकता है। जैसे सिद्ध व केवली भगवंतों को अकेला निश्चय सम्यग्दर्शन है; परन्तु उनकी तरह पहले गुणस्थान में अकेला व्यवहार सम्यग्दर्शन होने की बात लागू नहीं होती; क्योंकि सच्चे सम्यग्दर्शन के बिना मिथ्यादृष्टि के अकेले शुभराग को व्यवहार सम्यग्दर्शन नहीं कहा जाता। व्यवहार तो वही सच्चा है, जो निश्चयसापेक्ष हो।

अहा ! चैतन्य में अनन्त स्वभाव भरे हैं, उसकी महिमा अद्भुत है। उसके सन्मुख होकर रागरहित निर्विकल्प प्रतीति करने से अतीन्द्रिय आनन्द के वेदन सहित सम्यग्दर्शन प्रगट होता है, उसमें अनन्त गुणों के निर्मल भाव समाते हैं; वह

मोक्षमार्ग है; उसके साथ का राग, जो कि सचमुच में मोक्षमार्ग नहीं है; उसको मोक्षमार्ग कहना व्यवहार है। वह बिल्ली को सिंह कहने जैसा है अर्थात् यह सच्चा सिंह नहीं है, इससे भिन्न दूसरा सच्चा सिंह है, यह लक्ष्य में रखकर बिल्ली में सिंह का उपचार है; परन्तु जो सच्चे सिंह को लक्ष्य में नहीं लेते और बिल्ली को ही सच्चा सिंह मान लेते हैं, उनके लिए तो वह उपचार भी सच्चा नहीं है; व्यवहार और निश्चय - किसी का भी उन्हें ज्ञान नहीं है, वे देशना को समझे ही नहीं हैं। मुख्य के बिना उपचार किसका ? निश्चय के बिना व्यवहार किसका? जहाँ सच्चा मोक्षमार्ग लक्ष्य में हो, वहीं पर रागादि अन्य में मोक्षमार्ग का उपचार आता है; उसमें भी सच्चा मोक्षमार्ग तो एक ही है, उसको अच्छी तरह पहिचान कर उसका सेवन करना।

●●●

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

दिसम्बर 2013 के अंतिम सप्ताह में होने वाली परीक्षाओं का विवरण प्रकाशित किया जा रहा है, अत: सम्बन्धित परीक्षार्थी निम्नानुसार तैयारी करें -

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-2
2. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-3

द्वितीय वर्ष - 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2
2. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
2. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय)
2. नयचक्र-पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
3. हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (6 से 10 अध्याय)
2. नयचक्र-उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय प्रकरण)
3. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

नियमसार प्रवचन -

आत्मा का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 44वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णिग्गंथो णीरागो णिस्सल्लो सयलदोसणिम्मुक्को।
णिक्कामो णिक्कोहो णिम्माणो णिम्मदो अप्पा।।४४।।

(हरिगीत)

निर्ग्रन्थ है नीराग है नि:शल्य है निर्दोष है।
निर्मान-मद यह आतमा निष्काम है निष्क्रोध है।।४४।।

आत्मा निर्ग्रन्थ, निराग, नि:शल्य, सर्वदोषविमुक्त, निष्काम, नि:क्रोध, निर्मान और निर्मद है।

(गतांक से आगे....)

आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने (श्री प्रवचनसार की टीका में ८वें श्लोक द्वारा) कहा है कि -

(मंदाक्रांता छन्द)

इत्युच्छेदात्परपरिणतेः कर्तृकर्मादिभेद-
भ्रान्तिध्वंसादपि च सुचिराल्लब्धशुद्धात्मतत्त्वः।
सञ्चिन्मात्रे महसि विशदे मूर्च्छितश्चेतनोऽयं
स्थास्यत्युद्यत्सहजमहिमा सर्वदा मुक्त एव।।२१।।

(मनहरण कवित्त)

इस भाँति परपरिणति का उच्छेद कर।
करता-करम आदि भेदों को मिटा दिया।।
इस भाँति आतमा का तत्त्व उपलब्ध कर।
कल्पनाजन्य भेदभाव को मिटा दिया।।
ऐसा यह आतमा चिन्मात्र निरमल।
सुखमय शान्तिमय तेज अपना लिया।।

अपनी ही महिमामय परकाशमान।
रहेगा अनंतकाल जैसा सुख पा लिया।।२१।।

इसप्रकार परपरिणति के उच्छेद द्वारा (अर्थात् परद्रव्यरूप परिणमन के नाश द्वारा) तथा कर्ता, कर्म आदि भेद होने से उत्पन्न होने वाली भ्रान्ति के नाश द्वारा अन्त में जिसने शुद्ध आत्मतत्त्व को उपलब्ध किया है - ऐसा यह आत्मा, चैतन्य-मात्ररूप विशद (निर्मल) तेज में लीन रहता हुआ, अपनी सहज (स्वाभाविक) महिमा के प्रकाशमानरूप से सर्वदा मुक्त ही रहेगा।

शुद्ध आत्मा विकार का कर्त्ता नहीं है, साथ ही वीतरागी परिणाम कर्त्ता, कर्म आदि छह कारकों के भेद भी शुद्ध आत्मा में नहीं हैं।

यह साररूप श्लोक है। आत्मा का कल्याण करने वाले को क्या करना? आत्मा ज्ञानानन्दस्वरूपी चैतन्यघन है - उसकी अवस्था में दया, दान, काम, क्रोधादि के परिणाम होते हैं - वे वास्तव में आत्मा नहीं हैं; आत्मा तो शुद्ध चिदानन्दस्वरूप है - ऐसे भान और स्थिरता द्वारा परपरिणति उत्पन्न ही नहीं होती, उसे यहाँ परपरिणति का उच्छेद करना कहा है।

आत्मा परपदार्थों का अथवा परचैतन्य की अवस्थाओं का कर्त्ता नहीं है; क्योंकि वे सब परपदार्थ हैं, वे स्वयं अपनी-अपनी अवस्थारूप प्रतिसमय परिणमन करते हैं। तथा आत्मा की अपनी ही पर्याय में होने वाले शुभाशुभ परिणामों का आत्मा कर्त्ता और वे विकार आत्मा के कार्य - ऐसा कर्त्ता-कर्मपना भी शुद्धस्वभाव में नहीं है। यहाँ तो उससे भी सूक्ष्म बात है।

आत्मा त्रिकाल शुद्ध है - ऐसे भान द्वारा जो वीतरागी पर्याय प्रकट होती है उसका कर्त्ता आत्मा है, वीतरागी परिणाम कर्म है, वह वीतरागी परिणाम आत्मा द्वारा किया जाता है इसलिये आत्मा करण है, स्वयं ही अपने को धर्मदशा प्रदान करता है इसलिये आत्मा सम्प्रदान है, अपने में से ही निर्मलता उत्पन्न होती है इसलिये स्वयं अपादान है और अपने ही आधार से निर्मलता होती है इसलिये स्वयं अधिकरण है; इसप्रकार छह कारकों के भेद के लक्ष्य से धर्म होगा - ऐसा मानना मिथ्या शल्य है।

अहो ! अत्यन्त सूक्ष्म बात की है। शरीर, मन, वाणी, देव, शास्त्र, गुरु के लक्ष्य से तो धर्म है ही नहीं, पुण्य-परिणाम से भी धर्म नहीं; परन्तु अपने आधार से वीतरागी परिणाम प्रकट होगा - ऐसे छह कारकों के भेदपूर्वक विचार करने से राग होता है, धर्म नहीं होता। आत्मा शुद्ध चैतन्यवस्तु अभेद है, तथापि उसे भेदवाला

मानना और उनके आधार से धर्म मानना भ्रान्ति है।

जो जीव छह कारकों की भेदबुद्धि टालकर शुद्ध चैतन्यतत्त्व को प्राप्त करता है, वह उसमें लीन रहकर मुक्तदशा को प्राप्त होगा।

जो जीव शुद्ध चैतन्यस्वभाव का अवलम्बन लेता है, उसको भेद नहीं उठते और परपरिणति उत्पन्न नहीं होती; अर्थात् उसने परपरिणति का नाश किया तथा कर्त्ता, करण के भेदों की भ्रांति का नाश किया - ऐसे कहने में आता है। उस जीव ने शुद्ध आत्मतत्त्व को प्राप्त कर लिया है।

लौकिक में पैसा पुण्य के कारण मिलता है, पुरुषार्थ के कारण नहीं मिलता; और पुरुषार्थ करने पर भी पापोदय होने के काल में वह पैसा कहाँ विलीन हो गया, यह पता भी नहीं चलता। परन्तु यहाँ धर्म में तो एक समय मात्र भी पुरुषार्थ बिना नहीं चल सकता। इस तरह सच्चे पुरुषार्थ से जो जीव शुद्धात्मा को प्राप्त करता है और ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में लीन रहता है, वह अपनी स्वाभाविक महिमा के प्रकाशन में सदा मुक्त रहेगा। पराश्रयबुद्धि-रागबुद्धि टालकर जो जीव स्वभावबुद्धि करता है, वह अपने स्वभाव में त्रिकाल लीन रहता हुआ अनन्तकाल शुद्ध रहेगा - उसको मुक्तदशा कहते हैं।

४४वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्लोक कहते हैं -

(मंदाक्रांता छन्द)

ज्ञानज्योतिः प्रहतदुरितध्वान्तसंघातकात्मा
नित्यानन्दाद्यतुलमहिमा सर्वदा मूर्तिमुक्तः।
स्वस्मिन्नुच्चैरविचलतया जातशीलस्य मूलं
यस्तं वन्दे भवभयहरं मोक्षलक्ष्मीशमीशम् ।।६९।।

(मनहरण कवित्त)

ज्ञानज्योति द्वारा पापरूपी अंधकार का।
नाशक ध्रुव नित्य आनन्द का है धारक जो।।
अमूरतिक आतमा अत्यन्त अविचल।
स्वयं में ही उत्तम सुशील का है कारक जो।।
भवभयहरण पति मोक्षलक्ष्मी का अति।
ऐश्वर्यवान नित्य आतम विलासी जो।।
करता हूँ वंदना मैं आत्मदेव की सदा।
अलख अखण्ड पिण्ड चण्ड अविनाशी जो।।६९।।

जिसने ज्ञानज्योति द्वारा पापरूपी अंधकारसमूह का नाश किया है, जो नित्य आनन्द आदि अतुल महिमा को धारण करने वाला है, जो सर्वदा अमूर्त है, जो अपने में अत्यन्त अविचलपने द्वारा उत्तम शील का मूल है, उस भवभय को हरनेवाले मोक्षलक्ष्मी के ऐश्वर्यवान स्वामी को मैं वन्दन करता हूँ।

त्रिकाल ज्ञानज्योतिरूप शुद्धभाव के आधार से मोक्ष प्रकट होता है, इसलिये मैं उस ऐश्वर्यवान स्वामी को वन्दन करता हूँ।

इस श्लोक में मोक्षलक्ष्मी के स्वामी शुद्धस्वभाव को टीकाकार मुनिराज वन्दन करते हैं। कैसा है शुद्धस्वभाव अथवा कारणपरमात्मा ?

(१) जिसप्रकार सूर्योदय होने पर अन्धकार का नाश होता है; उसीप्रकार शुद्ध स्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान-एकाग्रता होने पर पुण्य-पापरूपी विकार उत्पन्न नहीं होता। शुद्धभाव कैसा है? ज्ञानज्योति है, ज्ञानरूप है, उसमें विकार का अनादि से अभाव है और ऐसा ही भान होने पर पर्याय में विकार की उत्पत्ति नहीं होती, तब पापरूपी अन्धकार का नाश किया - ऐसा कथन करने में आता है। मेरा आत्मा ज्ञानज्योति स्वरूप है - ऐसा अस्ति का ज्ञान होने पर उसमें अन्धकार की नास्ति का ज्ञान भी हो जाता है। अस्ति का ज्ञान होना निश्चय है और नास्ति का ज्ञान होना व्यवहार है।

(२) जिससे मोक्ष-कार्य प्रकट हो वह कारणपरमात्मा कैसा है? नित्य आनन्द, सुख, ज्ञान, चारित्र आदि अनन्तशक्तियों का धारक है और सम्यग्दर्शन का ध्येय है।

(३) शुद्ध आत्मा स्पर्शादिरहित अर्थात् सदा अमूर्त्त है।

(४) शुद्ध आत्मा अपने में सदा एकरूप रहता है, एकरूप शुद्ध है, इसलिये उत्तमशील का मूल है।

(५) ऐसे शुद्ध आत्मा में भवभय नहीं है। उसकी श्रद्धा करने से भवरहित दशा की प्राप्ति होती है। ऐसे मोक्षलक्ष्मी के स्वामी त्रिकाली शुद्धद्रव्य को मैं नमस्कार करता हूँ।

निमित्त से अथवा पुण्य-पाप के विकार से तो धर्म होता नहीं, एक समय की शुद्ध पर्याय में से भी धर्म होता नहीं। शुद्धोपयोग धर्म है और वह धर्म पर्याय में है; किन्तु शुद्धोपयोगरूप धर्म की पर्याय शुद्धोपयोगरूप पर्याय में से नहीं आती; वह तो त्रिकाल शुद्धभाव जो सदा एकरूप है, उसमें से प्रकट होती है। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : सम्यग्ज्ञान प्रकट करने के लिए क्या करना चाहिए ?

उत्तर : चैतन्य सामान्य द्रव्य पर दृष्टि करना चाहिए और उसके पहिले सात तत्त्वों का स्वरूप इसके ख्याल में आना चाहिए। विकल्पसहित सात तत्त्वों का निर्णय होना चाहिए।

प्रश्न : द्वादशांग का सार क्या है ?

उत्तर : अनन्त केवली, मुनिराज और सन्त ऐसा कहते हैं कि स्वद्रव्य का आश्रय करो और परद्रव्य का आश्रय छोड़ो। स्वभाव में रत हो और परभाव से विरक्त। यही बारह अंग का सार है।

प्रश्न : एक आत्मा के ही सन्मुख होना है तो इसके लिए इतने अधिक शास्त्रों की रचना आचार्यदेव ने क्यों की ?

उत्तर : इस जीव की भूलें इतनी अधिक हैं कि उन्हें बतलाने के लिए इतने अधिक शास्त्रों की रचना हुई है, की नहीं गई है, पुद्गल से हुई है।

प्रश्न : पर के लक्ष्य से आत्मा में नहीं जाते-यह तो ठीक है, तो क्या शास्त्र-वांचन से भी आत्मा में नहीं जाते ?

उत्तर : हाँ, शास्त्र बाँचने के विकल्प से भी आत्मा में नहीं जाते।

प्रश्न : तो क्या हमें शास्त्र नहीं बाँचने चाहिए ?

उत्तर : आत्मा के लक्ष्य से शास्त्राभ्यास करना - ऐसा श्री प्रवचनसार में कहा है तथा श्री समयसार की प्रथम गाथा में आचार्यदेव ने कहा है कि तू अपनी पर्याय में सिद्धों की स्थापना करके सुन। इसका अर्थ यह हुआ कि तू सिद्धस्वरूप है - ऐसी श्रद्धा-प्रतीति करके सुन। सिद्धस्वरूप में दृष्टि जोड़ी है अर्थात् सुनते और बाँचते हुए भी स्वरूप में एकाग्रता की वृद्धि होगी।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

भला यह भी कोई उम्र है मरने की ?
अभी तो मैं जवान हूँ, अभी तो सारा जीवन पड़ा है, अभी तो बहुत जीना है; यह कपोल कल्पना है जो हमें इस तरह से छलती है कि कहीं का नहीं छोड़ती - पढिये ! किस तरह

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल, मुम्बई

यह कौन नहीं जानता है कि एक दिन मरना तो सभी को है और फिर हमने इन्कार भी कब किया ? सबने मृत्यु को स्वीकार तो कर लिया है, अन्यथा ये श्मशान और कब्रिस्तान क्यों बनाते ? जीवन बीमा क्यों करवाते ? पर यह क्या ?

इस सबका मतलब यह तो नहीं कि मौत आकर इस तरह असमय ही हमें दबोच ले, यह तो अन्याय है, छल है मेरे साथ और मेरे परिजनों के साथ।

मैंने तो सोचा था, एक दिन बहादुरी के साथ मरूँगा, जिस तरह शान के साथ जीवन जिया है, उसी तरह शान के साथ मौत का भी वरण करूँगा, पर यह निष्ठुर तो मौका ही नहीं देती है। अब इस तरह, अचानक, असमय मैं इसका स्वागत कैसे कर सकता हूँ ?

भला यह भी कोई उम्र है मरने की ?

अभी तो मुझे बहुत कुछ करना शेष है, कितने-कितने महत्वपूर्ण, कितने सारे काम, सभी तो अधूरे ही पड़े हैं और फिर सबसे महत्वपूर्ण काम, अपने आत्मकल्याण का, उसकी तो मैंने शुरुआत भी नहीं की है।

सोचा था यह मंदिर पूरा हो जाए, तब अपने ही बनाए इस भव्य मंदिर में ही अपने धर्मध्यान की शुरुआत करूँगा, पर यह अवसर तो हाथ ही न आयेगा।

समझ नहीं आता है कि अब क्या करूँ, क्या ना करूँ ?

डॉक्टर कहते हैं कि मेरे हाथ में 15 दिन हैं, इन 15 दिनों में क्या-क्या कर लूंगा ?

करने को तो अब मात्र धर्म ही करना योग्य है, आत्मा की शरण में जाना ही योग्य है। योग्य तो है पर क्या मेरे लिये यह सम्भव है ?

जिस आत्मा को जाना नहीं, पहिचाना नहीं, अब 15 दिन में मैं क्या कर पाऊँगा और फिर करूँगा भी कैसे ? जीवन भर जो कुछ उपलब्ध किया है, वह सब कुछ इस तरह बिखरा पड़ा है, क्या सब कुछ ऐसे ही छोड़ दूं ? किसी को संभलवाऊँ नहीं ?

अरे ! यह कैसे संभव है ? जिसके लिए जिया, जिस पर मरा, उसे ऐसे ही कैसे छोड़ सकता हूँ ? यदि उसी के इन्तजाम में लगा रहता हूँ, तब भी वह मेरे किस काम आयेगा ? अब मैं तो चला।

इसका इंतजाम न करूँ तो यह सब इनके काम भी कैसे आयेगा, जिनके लिए मैं मर

मिटा। जो करना था, जो करना चाहिए था, वह तो जीवन भर किया नहीं और जो करने में सारा जीवन झोंक दिया, वह मेरे किसी काम आया नहीं। मेरे सारे जीवन की कमाई देकर भी जब मैं जीवन का एक भी अतिरिक्त क्षण नहीं खरीद सकता हूँ, तब उसी को संभालने और संभलवाने में ही बाकी बचे 15 दिन भी गंवा दूं ?

न गंवाऊँ तो क्या यूं ही लुट जाने दूं, बिखर जाने दूं ?

जिसके एक-एक पौधे को सींचा, एक-एक पत्ती का जतन किया, क्या उस सम्पूर्ण बाग को ही यूं ही छोड़ दूं, उजड़ जाने के लिए ?

क्या योग्य है और क्या अयोग्य ?

कौन बतलायेगा मुझे, कौन समझायेगा मुझे ?

पर यदि किसी को सम्भलवाने बैठूं भी तो भी 15 दिन तो यूं ही बीत जायेंगे, कितना कुछ बतलाने को, जीवन भर का कर्तृत्व और अनुभव !

फिर है कौन जिसे यह सब संभला दूं ?

यदि कोई मिला होता तो अब तक संभला न देता ?

पर यदि आज तक कोई नहीं मिला तो क्या गारंटी कि कभी कोई मिल ही जाएगा ?

अरे ! संभालने वाले हों भी तो क्या सभी को सम्भलवाने का समय मिल जाता है ?

आज मैं क्रन्दन कर रहा हूँ कि मेरे पास सिर्फ 15 दिन बचे हैं, पर इस तरह 15 दिन किस किसको मिल जाते हैं ? यह मुई मौत तो कभी भी आ धमकती है और जब आ जाती है तो 15 दिन तो क्या 15 लम्हे तक तो नहीं देती है।

रही बात कोई सम्भालने वाला मिलने की सो मैं तो क्या चक्रवर्ती भरत को तो पूरे छह खंड में कोई न मिला था, जो उसके राजपाट को संभाल लेता; यदि कोई संभाल लेता तो छह खंड का साम्राज्य बिखर क्यों जाता ? पर उनके बाद उनके 60 हजार पुत्रों में से और उनके आधीन 32 हजार मुकुटबद्ध राजाओं में से कोई भी ऐसा न निकला जो छहखंड के साम्राज्य को संभाल सकता।

तो क्या भरत ठहर गए ? अटक गए ? भरत को इस विकल्प ने क्यों न सताया कि अगर मैं यूं ही चल दिया तो इस छह खंड का क्या होगा ?

इसी उहापोह में यदि भरत ठहर जाते तो क्या होता ? वे आज कहाँ होते ?

कौन नहीं जानता कि आज वे कहाँ हैं, जो मरते दम तक सिंहासन पर डटे रहे।

फिर कौन कहता है कि भरत के जाने से छह खंड बिखर गया ?

कहाँ बिखर गया, क्या बिखर गया ? सब कुछ जहाँ और जैसा था, वही और वैसा

ही तो बना रहा। सिर्फ एक वो चला गया जो यह सोचता रहा कि इस सारे साम्राज्य को मैंने बाँध रखा है और मैं इसका संचालन करता हूँ।

वह अरे ! ऐसा कहाँ मानता था; क्योंकि वह तो क्षायिक सम्यग्दृष्टि था ? यदि वह ऐसा मानता तो यूं ही छोड़ कैसे देता ?

फिर एक बात और भी तो है, यदि आज वो इस तरह राजपाट न भी छोड़ देता तो क्या होता ? आज नहीं तो कभी तो छोड़ना ही था।

जीते जी न सही तो मरकर सही, छूटना तो था ही, छूट तो जाता ही।

तब क्या होता ? जो तब होता, वो आज हो जाने दे !

राजपाट की तो एक न एक दिन यही नियति थी, पर यदि भरत समय पर न छोड़ देते तो मोक्ष की जगह नरक में होते।

मैं भरत जैसा मजबूर तो नहीं हूँ न ?

भरत के छह खंड के सामने मेरे पास है ही क्या ? क्या लुट जाएगा ?

अरे ! भरत के पास तो 96000 पत्नियाँ थीं, उन्हें तो उनकी भी चिन्ता हो सकती थी कि मेरे जाने के बाद उनका क्या होगा, क्या चक्रवर्ती सम्राट के परिजन जमीन पर न आ जायेंगे ? वे क्या करेंगे, लोग क्या कहेंगे ?

मेरे पास तो है ही क्या ? क्या यह मेरा दुर्भाग्य नहीं, क्या यह आगत अन्धकार का संकेत नहीं कि अभी भी मुझे सारे जगत की तो चिन्ता हो रही है, पर अपने आप की नहीं?

यूं भी यह क्या बात हुई कि सब मेरी चिंता करें और मैं सबकी, कोई कुछ भी न कर सके। क्या यह बेहतर नहीं कि सभी अपने बारे में सोचे और उचित कदम उठायें ?

क्या इसी में सबका हित नहीं है ?

अरे ! जा तो मैं रहा हूँ, तैयारी की जरूरत मुझे है, अब बारी मेरी है, जिसके बारे में सोचा जाना चाहिए, मैं भी सोचूँ और सभी सोचें।

वे तो हैं, वे तो अभी रहेंगे, जो उनके लिए करने को शेष रह गया है, वह वे कर लेंगे।

जाते जाते यदि माँ 4 और दिनों की रोटियाँ सेक भी गई तो क्या, क्या उसके बाद कोई खाना बना ही न सकेगा, क्या किसी को खाने को ही न मिलेगा ?

तब मैं ही क्यों इन्हीं के चिन्तन में व्यस्त हूँ ?

पर द्रव्य तो पर है, चक्रवर्ती की संपदा हो या एक तिनका, वह तो छूटा हुआ ही है, वह तो मेरा हुआ ही कब, मैं ही उसके मोहवश उससे बंधा रहा, अब यह सब तो मेरे साथ

जा ही नहीं सकता, तब भी क्या इसके मोह को ही ढोता रहूँ ?

अरे मैं ही यदि अभी न मरता 10-20 वर्ष और भी जी जाता तो भी क्या होता, एक न एक दिन तो मरना ही था, क्या तब भी यही उहापोह न होता ?

तब फिर क्यों मैं आज विचलित हो रहा हूँ ? क्यों नहीं वस्तु के इस स्वरूप को मैं सरलता के साथ स्वीकार कर पाता हूँ ?

आज क्यों मैं इस मौत को कोसता हूँ कि यह बेवफा हो गयी है, इसका तो वादा था कि एक न एक दिन अवश्य ही आयेगी सो अपना वादा निभाने चली आयी, बेवफा यदि कोई हुआ है तो वह जिन्दगी हुई है जो जीवनभर कभी मुझे एक पल के लिए भी अपनी वफादारी के बारे में आश्वस्त तो न कर सकी और आज अचानक इसतरह मेरा साथ छोड़ने के लिए तत्पर हो गई।

हे भगवान ! अब मैं क्या करूं ?

क्या अब मैं इसी उहापोह में ही उलझा रहूँगा ?

जीवन भर जो गलती नहीं की, वह अब करूँगा ?

जीवन में कभी भी मैं रुका नहीं, अटका नहीं, दुविधा में न रहा, तुरंत निर्णय किये और क्रियान्वित भी कर डाले, पर अब इस अन्तकाल में मुझे क्या हो गया है ?

कोई निर्णय क्यों नहीं हो पाता है ?

अरे ! पहिले भी मैं क्या करता था ?

यह भी कर लूं, वह भी कर लूं, सब करने का निर्णय कर लेता था, बिना यह सोचे कि यह सब कुछ होगा कब और कैसे ? अब आज जब यह सोचता हूँ कि सब कुछ कैसे होगा, तो निर्णय नहीं हो पाता है।

पर अब मैं क्या करूँ ? यदि यह सब न होता तो कम से कम आज तो मैं अपने आत्मा का चिन्तन कर पाता?

आज तक मैं अपने आप को कितना सौभाग्यशाली मानता था कि मुझे यह सब विभूति मिली है, पर आज समझा कि यह मेरा सौभाग्य न थी, यह तो दुर्भाग्य का फल थी; क्योंकि यह भोगने के काम तो आई नहीं और अब आत्मकल्याण में भी बाधक बन कर खड़ी हो गई है।

किसी और ने मुझे नहीं छला, मैं स्वयं अपनी भूल से दुखी हुआ;

परन्तु, हाय ! मैं कितना छला गया ! ●

समाचार दर्शन -

शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी में कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा विकसित -

कुन्दकुन्द कहान नगर संकुल के जिनायतनों का पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

● गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन सहित प्रतिदिन लगभग 7 घंटे प्रवचनों का लाभ ● लगभग 15 हजार साधर्मियों की उपस्थिति ● देश की समस्त मुमुक्षु संस्थाओं की उपस्थिति ● हजारों रुपयों का सत्साहित्य एवं सी.डी. प्रवचन घर-घर पहुँचे ● किसी भी प्रकार के पशु का उपयोग नहीं

सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा मुमुक्षु भाई बहिन धर्माराधना कर सकें इस उद्देश्य से बनाये गये श्री कुन्दकुन्द कहान नगर, शिखरजी के जिनायतनों का प्रतिष्ठा महोत्सव शनिवार, दिनाँक 24 नवम्बर से गुरुवार 29 नवम्बर, 2012 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पर प्रासंगिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्द्रजी जैन जबलपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, श्री प्रकाशभाई शाह कोलकाता, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री मङ्गलायतन, पण्डित मधुकरजी जलगांव, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, श्री कान्तिकुमारजी जैन इन्दौर, श्री श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. नन्हेलालजी सागर, डॉ. विवेकजी जैन छिंदवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित संदीपजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री धवल आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न हुई।

महोत्सव में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल द्वारा लिखित नियमसार ग्रन्थ की ४९२ पृष्ठीय आत्मप्रबोधिनी टीका व नियमसार अनुशीलन-भाग ३ का विमोचन हुआ। इसके अतिरिक्त

डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा संपादित पंचास्तिकाय संग्रह इत्यादि अनेक ग्रन्थों के साथ-साथ पण्डित हेमन्तभाई गांधी सोनगढ के निर्देशन में गुरुदेवश्री के जीवन पर आधारित कहान क्रमबद्धकथा की वी.सी.डी., पण्डित गौरव-सौरभ शास्त्री इन्दौर द्वारा निर्मित समयसार की वी.सी.डी. (जिसमें समयसार की ४१५ गाथाओं पर आधारित चित्र के साथ पद्यानुवाद व गद्यानुवाद दिया गया है), ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन् की पद्यमय रचनाओं की सी.डी., युगलजी के प्रवचनों की ऑडियो-वीडियो डी.वी.डी., आदि अनेक ग्रन्थों, सी.डी. व डी.वी.डी. का विमोचन किया गया।

डॉ. विवेक जैन सिवनी द्वारा रचित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के नवीन गीतों की सी.डी. 'मधुवन महोत्सव' के नाम से पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा के निर्देशन में सौधर्म इन्द्र श्री अजितजी जैन बड़ौदा के सौजन्य एवं विशेष प्रयत्नों से बनाई गयी।

इस महोत्सव में कोलकाता, दिल्ली, ध्रुवधाम बांसवाड़ा व छिंदवाड़ा की अष्टदेवियों द्वारा सभी नृत्य इन्हीं गीतों पर किए गये।

इस अवसर पर श्री अनन्तभाई सेठ परिवार व श्री नेमिशभाई शांतिलाल शाह परिवार मुम्बई का उनके विशिष्ट योगदान हेतु सार्वजनिक सम्मान समारोह किया गया। इसके अतिरिक्त श्री रसिकलाल माणिकचन्द धारीवाल पूना का भी विशेष सम्मान किया गया।

इसके अतिरिक्त इस संपूर्ण प्रोजक्ट के कल्पनाकार तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, इसे साकार करने में अपना अथक योगदान देने वाले ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री महीपालजी शाह बांसवाड़ा एवं महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री का उनकी महत्वपूर्ण सेवाओं के लिये मुमुक्षु मण्डल इन्दौर एवं संपूर्ण सभा की ओर से श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री पदमजी पहाड़िया एवं श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर ने प्रशस्ति-पत्र भेंटकर अभिनन्दन किया।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य डॉ. माधुरी-डॉ. शरद जैन भोपाल को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री अजित-अनिता जैन बडोदरा, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री प्रेमचन्द-सुनीता बजाज कोटा एवं यज्ञनायक श्री निहालचंद-अचरजदेवी जैन जयपुर थे।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्री रसिकलाल माणिकचन्द धारीवाल पूना के करकमलों द्वारा किया गया। सिंहद्वार का उद्घाटन श्री जसवन्तलाल छोटालाल मेहता फतेहपुर एवं प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्रीमती नाथीबाई शान्तिलाल टाया मलाड मुम्बई ने किया।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही, जिसमें लगभग 15 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव के सभी कार्यक्रम पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा होने वाली साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 7 अक्टूबर को 'दशलक्षण में तत्त्वप्रचार' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय की ओर से दशलक्षण महापर्व के अवसर पर तत्त्वप्रचारार्थ देशभर में गये विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाये। यह गोष्ठी दो सत्रों में आयोजित की गई।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय) ने एवं द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ब्र. यशपालजी जैन ने की। गोष्ठी में दशलक्षण पर्व के अवसर पर तत्त्वप्रचारार्थ गये विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाये।

सभी का अनुभव बहुत अच्छा रहा, अनेक स्थानों पर पाठशाला, स्वाध्याय सभा, दैनिक पूजन इत्यादि अनेक धार्मिक गतिविधियों का संचालन विद्वानों ने प्रारम्भ कराया।

गोष्ठी में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं श्रीमती कमला भारिल्ल आदि सभी अध्यापकगण उपस्थित थे। गोष्ठी का संचालन विवेक जैन भिण्ड, नवीन जैन एवं सनत जैन ने किया।

दिनांक 14 अक्टूबर को 'चरणानुयोग से जैनत्व की सिद्धि' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. नीतेशजी शाह जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग में स्वप्निल जैन (कनिष्ठ उपाध्याय) एवं शास्त्री वर्ग में नवीन जैन उज्जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का संचालन विवेक शास्त्री एवं अमितेन्द्र शास्त्री ने किया। अध्यक्ष महोदय को ग्रन्थ भेंट एवं आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 16 से 25 अक्टूबर तक बाल संस्कार शिविर एवं सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री धवल भोपाल के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनांक 22 अक्टूबर को उदयगिरि पर भगवान शीतलनाथ का निर्वाण कल्याणक मनाया गया। इस शिविर में लगभग 800 लोगों ने धर्म लाभ लिया। विधान के आमंत्रणकर्ता श्री शैलेन्द्रकुमारजी इंजी. एवं निर्मलकुमारजी नहूसा परिवार थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अनिलजी धवल एवं पण्डित दीपकजी धवल के सहयोग से संपन्न हुये।

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ कोहेफिजा में दि.जैन मंदिर में ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा दिनांक 9 से 21 नवम्बर तक दोनों समय प्रवचन हुये।

इस अवसर पर प्रात: प्रवचनसार के ज्ञेयाधिकार एवं सायं नाटक समयसार के गुणस्थानाधिकार के आधार पर प्रवचन हुये। इन प्रवचनों से अनेक साधर्मीजन बहुत प्रभावित हुये एवं भविष्य में भी आने का निमंत्रण दिया।

दिनांक 18 नवम्बर को ब्र. यशपालजी उदयगिरि-विदिशा गये, जहाँ ज्ञाता-ज्ञेय विषय पर प्रवचन हुआ एवं मुमुक्षुओं से विशेष चर्चा भी हुई। वहाँ के प्रमुख लोगों ने भविष्य में आकर प्रवचनों का लाभ प्रदान करने हेतु निमंत्रित किया।

आवश्यकता है

भट्टारक यशकीर्ति उ.मा. विद्यालय प्रतापगढ (राज.) की एक जैन शिक्षण संस्था में सभी 600 विद्यार्थियों को धार्मिक शिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है। यह परीक्षा वीतराग-विज्ञान से दिलाई जाती है। विद्यालय के लिये प्रधानाचार्य का पद रिक्त है। **योग्यता-** प्रशिक्षित स्नातकोत्तर योग्यताधारी (किसी भी विषय में एम.ए, एम.कॉम., एम.एससी., बी.एड, एम.एड), **विशिष्ट योग्यता-** जैनधर्म का ज्ञान, शास्त्र प्रवचन, विधान अनुष्ठान करवाना।

संपर्क सूत्र - भट्टारक यशकीर्ति उच्च माध्यमिक विद्यालय, यशकीर्ति मार्ग, प्रतापगढ 312605 (राज.) फोन - 01478-222129

प्रार्थी अपना प्रार्थना पत्र सादे कागज पर मय योग्यता प्रमाण-पत्र के प्रस्तुत करें।

- अक्षय कुमार जैन

आगामी कार्यक्रम...

1. श्री दि. जैन महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में एक अध्यात्म संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 1 से 6 जनवरी 2013 तक भिण्ड (म.प्र.) में होने जा रहा है, जिसमें ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' के अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर आदि विद्वानों का समागम प्राप्त होगा। लाभ लेने हेतु संपर्क करें - महेन्द्रजी शास्त्री (मंत्री)-9770187377, कौशल किशोर जैन (उपमंत्री)-9826237176, श्री वीरसेन सर्राफ (अध्यक्ष)।

2. काटोल-नागपुर (महा.) में तृतीय महाराष्ट्रीय टोडरमल स्नातक परिषद सम्मेलन का आयोजन दिनांक 6 जनवरी 2013 को किया जा रहा है। इस सम्मेलन में पण्डित महावीरजी पाटील, पण्डित जिनचंदजी अलमान, पण्डित नंदकिशोरजी शास्त्री, पण्डित आलोकजी शास्त्री एवं सभी सदस्यों के अतिरिक्त डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर भी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। इसलिये महाराष्ट्र के सभी विद्वत्गणों एवं मुमुक्षु भाइयों को हार्दिक आमंत्रण है।

आध्यात्मिक व्याख्यानमाला सानंद संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर दिनांक 10 से 14 नवम्बर तक श्री पंचपरमेष्ठी पूजन विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार के मोक्ष अधिकार पर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक व समयसार पर, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' द्वारा नियमसार पर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा प्रवचनसार पर, पण्डित दिनेशभाई शहा व डॉ. उज्ज्वलाबेन शहा द्वारा पंचपरावर्तन विषय पर प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 10 नवम्बर को श्री नितिनभाई चिमनलाल शाह के निवास स्थान से मंगल कलश शोभायात्रा प्रारंभ हुई। इस अवसर पर ध्वजारोहण श्रीमती मंजुलाबेन चिमनलाल शाह तथा सुनिताबेन नितिनभाई शाह परिवार द्वारा किया गया।

दिनांक 14 नवम्बर को प्रात: मंगल सुप्रभात फेरी, गुरुदेवश्री का मांगलिक एवं पूजन-विधान का समापन हुआ। समापन समारोह में कहान नगर परिसर में जिनेन्द्र रथयात्रा का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के कुशल निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल एवं उनके सहयोगियों द्वारा संपन्न हुआ।

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर की -

झांकी को प्रथम पुरस्कार

जयपुर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के दौरान सुगन्ध दशमी के अवसर पर मंदिरों में झांकियाँ लगाई जाती है। इसी क्रम में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा जयपुर महानगर द्वारा भी प्रतिवर्ष टोडरमल स्मारक भवन में सुन्दर एवं शिक्षाप्रद झांकियों का आयोजन किया जाता है, जिसे लगभग 10-15 हजार साधर्मियों द्वारा देखा जाता है। इस वर्ष 'सम्यग्दर्शन के आठ अंग' विषय पर एक सुन्दर सजीव झांकी का आयोजन किया गया। जयपुर में इस वर्ष लगभग 30-35 झांकियाँ लगी, जिनमें से टोडरमल स्मारक भवन की झांकी को दिनांक 5 नवम्बर को **श्री दिगम्बर जैन महासमिति द्वारा प्रथम स्थान** एवं **राजस्थान जैन युवा महासभा द्वारा द्वितीय पुरस्कार** दिया गया। हार्दिक बधाई !

छात्रों ने किया मंगलायतन का शैक्षिक भ्रमण

श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला हनुमानगंज फिरोजाबाद के विद्यार्थियों ने दि. 28 अक्टूबर को अलीगढ स्थित तीर्थधाम मंगलायतन व मंगलायतन विश्वविद्यालय का भ्रमण किया।

पाठशाला संचालक श्रीमती सरोजलता जैन के निर्देशन में हुए इस शैक्षिक भ्रमण में लगभग 100 छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही। मंगलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति सतीशचन्द्र जैन ने कहा कि छात्र-छात्राओं को ऐसे भ्रमण पर लाने से उनमें धर्म की रुचि जागृत होती है। इस भ्रमण में पाठशाला प्रमुख श्री अवनीन्द्र जैन, पाठशाला सहसंचालक श्रीमती पूनम जैन आदि गणमान्य उपस्थित थे।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

भुज (गुज.) : यहाँ श्रीमत् राजचन्द्र साधना केन्द्र में दीपावली के पावन प्रसंग पर 4 दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक विद्वान पण्डित जितेन्द्र सिंह यादव द्वारा तीनों समय आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

धन्यवाद !

1. घुवारा (म.प्र.) निवासी श्री प्रमोद कुमारजी मस्ताई द्वारा अपने सुपुत्र प्रखर मस्ताई के आई.टी.आई. में चयन होने के उपलक्ष्य में 1100/- रुपये टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिए प्रदान किये गये।

2. कुशलगढ-बांसवाड़ा (राज.) निवासी श्री हंसमुखलालजी शाह दिनांक 31 दिसम्बर 2012 को सेवानिवृत्त हो रहे हैं। इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1000 रुपये प्राप्त हुये। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद !

पण्डित कैलाशचंदजी नहीं रहे

बुलन्दशहर (उ.प्र.) निवासी पण्डित कैलाशचन्दजी जैन का 101 वर्ष की आयु में दिनांक 19 दिसम्बर को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने गुरुदेवश्री के सानिध्य में खूब धर्मलाभ लिया एवं जीवनभर उसके प्रचार-प्रसार हेतु संलग्न रहे। ज्ञातव्य है कि आप मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) निवासी श्री पवनजी जैन के पिताजी थे। आपकी स्मृति में श्री टोडरमल स्मारक भवन में 19 दिसम्बर को सायंकाल शोकसभा रखी गई।

शिलान्यास महोत्सव संपन्न

दीवानगंज-भोपाल (म.प्र.) : यहाँ भोपाल-विदिशा हाइवे पर ज्ञानोदय तीर्थ का उदय होने जा रहा है, जिसका शिलान्यास एवं शांतिविधान दिनांक 9 दिसम्बर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सानिध्य में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार की गाथा 19 पर प्रवचन हुआ।

कार्यक्रम के ध्वजारोहणकर्ता व शिलान्यासकर्ता श्री सुनीलजी जैन 501 भोपाल थे। इस कार्यक्रम में श्री प्रभुरामजी चौधरी (विधायक-सांची विधानसभा क्षेत्र) भी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त भोपाल, विदिशा, सागर आदि स्थानों से लगभग 1200-1500 साधर्मीजन उपस्थित थे।

विधि-विधान के कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा संपन्न हुये। ज्ञातव्य है कि ज्ञानोदयतीर्थ स्वाध्याय भवन, सीमंधर जिनालय, शीतलनाथ भगवान का समवशरण, मानस्तम्भ, भोजनशाला, यात्रियों के निवास के लिए सर्वसुविधायुक्त 60 कमरों का अतिथिगृह, प्राकृतिक चिकित्सालय, विद्वत्-निवास, 60 कमरों का छात्रावास, धार्मिक व शांति से जीवन-यापन करने के इच्छुक श्रावकों के लिए स्थायी निवास की सुविधा से सुसज्जित होगा।

इस अवसर पर मन्दिर के आर्किटेक्ट इंजी. विनोदजी निरखे मलकापुर का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री मुकेशजी जैन इन्दौर ने किया।

– अशोक जैन भोपाल (अध्यक्ष-ज्ञानोदयतीर्थ)

अष्टाह्निका महापर्व सानंद संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट अजमेर के तत्त्वावधान में श्री सीमंधर जिनालय में दिनांक 21 से 28 नवम्बर तक कार्तिक माह की अष्टाह्निका महापर्व संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात:काल पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा द्वारा समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये।

महापर्व में प्रतिदिन नित्यनियम पूजन, पंचमेरु व नंदीश्वर पूजन एवं कविवर राजमलजी पवैया द्वारा रचित 'श्री गणधर वलय ऋषि मंडल विधान' का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के कार्य पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर, श्री नवलजी दोशी, श्रीमती अर्चना जैन व सरोज पाण्ड्या द्वारा किया गया। **– प्रकाश चन्द पाण्ड्या**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

13 जनवरी 2013	बरौदास्वामी	शिलान्यास
27 जनवरी से 1 फरवरी 2013	चन्देरी	पंचकल्याणक
2 से 5 फरवरी 2013	मंगलायतन	वार्षिकोत्सव

शोक समाचार

1. झांसी (उ.प्र.) निवासी श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' (ग्रामीण विकास राज्य मंत्री, भारत सरकार) की माताजी श्रीमती शांतिदेवी ध.प. श्री विष्णुकुमारजी जैन का 75 वर्ष की आयु में दिनांक 11 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। ज्ञातव्य है कि आपकी माताजी का टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित गतिविधियों में भरपूर सहयोग रहता था। आप स्वाध्यायी महिला थीं।

2. दिल्ली निवासी डॉ. अशोकजी गोयल दिल्ली की माताजी **श्रीमती भगवतीबाई** ध.प. श्री प्रेमचन्दजी जैन का 81 वर्ष की आयु में दिनांक 30 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहविलय हो गया। टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ.अशोकजी गोयल अ.भा. दि.जैन विद्वत्परिषद के मंत्री हैं।

3. मुम्बई निवासी श्री सोहनलालजी कासलीवाल की धर्मपत्नी **श्रीमती कंवरदेवी कासलीवाल** का 79 वर्ष की आयु में दिनांक 4 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था को 3300/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

4. खैरागढ (छत्तीसगढ) निवासी श्रीमती घुड़ीबाई ध.प. स्व.श्री खेमराज गिड़िया का 92 वर्ष की आयु में दिनांक 24 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थीं। आपने गुरुदेवश्री से 33 वर्ष की आयु में ब्रह्मचर्य लेकर सोनगढ में ही जीवन व्यतीत किया। आपकी स्मृति में संस्था को 1000 रुपये प्राप्त हुये।

5. न्यूयार्क (अमेरिका) निवासी श्री धीरूभाई शाह का 62 वर्ष की आयु में 12 दिसम्बर को देहावसान हो गया। आपके घर में हजारों ग्रन्थों एवं टेप प्रवचनों का संकलन था, जिसका आप प्रतिदिन घंटों स्वाध्याय करते थे। अमेरिका में चलने वाली तत्त्वज्ञान की गतिविधियों में आप अनन्य सहयोगी थे। टोडरमल स्मारक के प्रति आपका अपार स्नेह था। ज्ञातव्य है कि आपकी अस्वस्थता का समाचार सुनकर डॉ. भारिल्ल आपको सम्बोधन देने हेतु अमेरिका गये थे। डॉ. भारिल्ल के साथ 15 दिन रहकर आपने तत्त्वचर्चा का खूब लाभ लिया।

6. मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती सन्तोष धर्मपत्नी श्री चन्द्रभूषण जैन महलके वाले का दिनांक 5 अक्टूबर को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 11 हजार रु. प्राप्त हुये।

7. श्री विनोद कुमार डेवडिया शाहगढ की माताजी **श्रीमती बेनीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री खूबचन्दजी डेवडिया** का दिनांक 13 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि श्री विनोदजी डेवडिया तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि के अध्यक्ष हैं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 201/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें संसार-दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों-यही मंगल भावना है।

श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित पंचकल्याणक का –

वार्षिकोत्सव महोत्सव

(शुक्रवार 22 फरवरी से रविवार 24 फरवरी 2013 तक)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा गत वर्ष २१ से २७ फरवरी २०१२ तक ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था। उस महामहोत्सव का एक वर्ष पूर्ण होने जा रहा है, **महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का वार्षिकोत्सव शुक्रवार 22 फरवरी से रविवार 24 फरवरी 2013 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों के अतिरिक्त गोष्ठियों का भी लाभ प्राप्त होगा। ज्ञातव्य है कि इस प्रसंग पर रविवार 24 फरवरी को यहाँ विराजमान जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक होगा।

इस आयोजन में आप सबको सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सहभागी होकर धर्मलाभ प्राप्त करने हेतु श्री टोडरमल स्मारक

जयपुर पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

विशेष अनुरोध : आप कब, किस साधन से, कितने लोग जयपुर पधार रहे हैं, इसकी पूर्व सूचना अवश्य भेजें, ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।